इक्कीसवीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस

डॉ. इरफान ह्यूमन

21 वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन 27 से 31 दिसम्बर, 2013 तक मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल में किया गया। इसमें 10 से 14 वर्ष के जूनियर और 15 से 17 वर्ष के सीनियर विद्यार्थियों ने ऊर्जा संसाधन, ऊर्जा प्रणाली, ऊर्जा एवं समाज, ऊर्जा एवं पर्यावरण, ऊर्जा प्रबंधन एवं संरक्षण तथा ऊर्जा-योजना एवं मॉडलिंग जैसे विषयों पर अपनी वैज्ञानिक परियोजनाएं प्रस्तुत कीं।

राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में दो वर्षों के लिए एक केन्द्रीय विषय होता है। इस बार का केन्द्रीय विषय था 'ऊर्जाः सम्भावनाएं, उपयोग और संरक्षण'। यह कार्यक्रम देश के बच्चों को एक साझा मंच उपलब्ध कराता है, जहां वे अपनी संकल्पनाओं को छोटी-छोटी शोध परियोजनाओं के द्वारा किसी वैज्ञानिक की तरह प्रस्तुत करते हैं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद (एनसीएसटीसी) द्वारा उत्प्रेरित और एनसीएसटीसी-नेटवर्क द्वारा आयोजित इस पांच दिवसीय आयोजन के पहले दिन 'वॉक फॉर साइंस' नामक बाल वैज्ञानिक यात्रा का आयोजन बोर्ड ऑफिस चौराहे से टी.टी. नगर स्टेडियम तक किया गया। इस यात्रा में देश-विदेश से आए बच्चों ने हिस्सा लेकर अपनी-अपनी भाषा और संस्कृति में निहित विविधता में वैज्ञानिक एकता का संदेश दिया। इस रैली में दो हज़ार से अधिक बाल वैज्ञानिकों, उनके निर्देशकों, शिक्षकों और ज़िला समन्वयकों व राज्य समन्वयकों ने हिस्सा लिया। इसका शुभारंभ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद के डॉ. बी.पी. सिंह और एनसीएसटीसी-नेटवर्क के अध्यक्ष अनुज सिन्हा ने हरी झण्डी दिखाकर किया।

'वॉक फॉर साइंस' में यू.ए.ई. और आसियान देशों के बच्चों सहित देश के विभिन्न प्रांतों के विद्याथियों ने अपने-अपने प्रदेश और संस्थाओं का झण्डा लेकर उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। यहां देश-विदेश की विविध संस्कृतियों को दर्शाने वाली झांकिया भी प्रस्तुत की गईं।

'वॉक फॉर साइंस' टी.टी. नगर स्टेडियम पहुंचने पर प्रख्यात शिक्षाविद और वैज्ञानिक प्रो. यशपाल ने दीप प्रज्वलित कर 21वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का विधिवत शुभारम्भ किया। इस अवसर पर उन्होंने बाल वैज्ञानिकों से सृजनात्मकता से जुड़ने का आह्वान करते हुए कहा कि बच्चे अपनी वैज्ञानिक परियोजनाओं में नवीनता लाएं और उसे नवाचारी बनाएं तभी नवीन वैज्ञानिक शोध का मार्ग प्रशस्त होगा।

प्रोफेसर यशपाल ने विज्ञान के समाजीकरण पर बल देते हुए कहा कि विज्ञान वास्तव में समाज का ही एक हिस्सा है, इसे अलग नहीं समझना चाहिए। उन्होंने भोपाल के ऐसे कई व्यक्तियों के उदाहरण दिए, जिनका सामाजिक जागरूकता में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है और हमें उनसे सीख लेना चाहिए।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद के डॉ. बी.पी. सिंह ने दुख व्यक्त करते हुए कहा कि आज हम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आत्मनिर्भता हासिल करते जा रहे हैं, लेकिन शिक्षित समाज में घटने वाली अंधविश्वासी घटनाएं हमारी अवैज्ञानिक मानसिकता को दर्शाती हैं। उन्होंने कहा कि कर्नाटक सरकार द्वारा 17 करोड़ खर्च कर वर्षा के लिए यज्ञ किया जाना हमारी शिक्षित सोच को दर्शाता है कि हमने कितनी प्रगति कर ली है।

उन्होंने कहा कि हमें आधुनिकता की दौड़ में प्राचीन उपलब्धियों को भूलना नहीं चाहिए, लेकिन ऐसी परम्पराओं को अपनी पीढ़ियों पर थोपना भी नहीं चाहिए, जो अवैज्ञानिक हों। उन्होंने कहा कि ये बड़े दुर्भाग्य की बात है कि आज हमारे यहां 500 वर्ष पुराने मंदिर तो मिल जाएंगे लेकिन 500 वर्ष पुराना कोई विद्यालय नहीं मिलेगा।

एनसीएसटीसी-नेटवर्क के अध्यक्ष अनुज सिन्हा ने कहा कि इस आयोजन में रंगों, संस्कृतियों, भाषा और वैज्ञानिक विचारों की विविधता दिख रही है। उन्होंने बाल वैज्ञानिकों

को संबोधित करते हुए कहा कि 21वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस डिजिटल होने की ओर अग्रसर होकर ई-कांग्रेस बन गई है। मैं चाहता हूं कि आने वाली सभी कांग्रेस ई-कांग्रेस ही हों ताकि हम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का सटीक उपयोग कर कार्यक्रम को अधिक सफल बना सकें, जहां पेपर का उपयोग बहुत कम हो जाएगा।

इस अवसर पर एनसीएसटीसी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. के. पाण्डेय ने राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस को एक अनूठा प्रयोग बताते हुए कहा कि इसके माध्यम से बच्चों को एक ही संदेश जाता है कि हर काम को वैज्ञानिक विधि से किया व सीखा जाए। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में परियोजना प्रस्तुत करने वाले बच्चे सीधे समाज से जुड़ते हैं और स्थानीय स्तर पर ज़मीन से जुड़ी समस्याओं का हल वैज्ञानिक विधि से तलाश करते हैं।

कार्यक्रम में मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के महानिदेशक डॉ. पी.के. वर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि विज्ञान जीवन के हर कदम पर है और यह विषय नहीं बल्कि जीवन जीने की एक कला है। राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के माध्यम से बच्चों को एक ऐसा मंच मिला है जहां बच्चे अपने वैज्ञानिक विचारों का आदान-प्रदान करते हैं और वैज्ञानिक बनने का प्रोत्साहन पाते हैं। उन्होंने कहा कि जब हम ग्लोबल विलेज की बात करते हैं तो हम दुनिया में कहीं भी हों, हमें एक ही भाषा में बात करना चाहिए, और वह भाषा है विज्ञान की भाषा।

बाल विज्ञान कांग्रेस में एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया, जिसका उद्घाटन बाल वैज्ञानिक ज़ोया फातिमा ने किया। इस दौरान वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रचार-प्रसार में जुटी विभिन्न संस्थाओं ने अपने स्टाल लगाकर बच्चों के बीच वैज्ञानिक जानकारियों का खज़ाना बांटा।

प्रदर्शनी स्थल पर विज्ञान शिक्षकों और विज्ञान संचारकों द्वारा लगाए गए एक्टिविटी कॉर्नर में बच्चों की संख्या सबसे अधिक देखी गई। यहां बच्चों को स्वयं वैज्ञानिक गतिविधियां करके विज्ञान सीखने और जानने का एक सुनहरा मौका मिला। प्रदर्शनी स्थल के बाहर बच्चों के अवलोकनार्थ आंचलिक विज्ञान केंद्र भोपाल और चिल्ड्रन साइंस सेन्टर इन्दौर की चलित विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जहां बच्चों ने बस के बाहर और अन्दर लगे विज्ञान प्रादर्शों को देखने के साथ स्वयं विज्ञान प्रयोग किए। यहीं निशुल्क तारामण्डल भी लगाया गया, जहां बच्चों ने ब्रह्मांड के गूढ रहस्यों को जाना और आकाशीय रंगमंच पर चांद-सितारों के दर्शन किए।

कांग्रेस के दौरान 'ऊर्जाः सम्भावनाएं, उपयोग और संरक्षण' केन्द्रीय विषय से सम्बंधित उपविषयों पर बाल वैज्ञानिकों ने निर्णायकों के समक्ष अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। इस मौके पर बाल वैज्ञानिकों के शोध के प्रदर्शन के लिए पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

कांग्रेस के दौरान शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। कार्यशाला में डॉ. नरेन्द्र नायक ने जादू व चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया और डॉ. जयंत बी. फाल्के, डॉ. एच.सी. प्रधान, डॉ. ज्योति शर्मा और डॉ. बी.एन. दास ने शिक्षकों को विज्ञान शिक्षण के रोचक तरीके बताए।

वैज्ञानिक जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। संध्याकालीन सत्र में फेस-टू-फेस कार्यक्रम के अर्न्तगत बच्चों ने वैज्ञानिकों के सीधे संवाद किया। इसमें पहले दिन प्रख्यात शिक्षाविद और वैज्ञानिक प्रो. यशपाल ने बच्चों के अटपटे सवालों के चटपटे वैज्ञानिक जवाब दिए। दूसरे दिन डॉ. जयंत फाल्के ने और तीसरे दिन डॉ. ए.के. बिसारिया ने बच्चों के प्रश्नों के उत्तर दिए।

समापन समारोह में एनसीएसटीसी के वैज्ञानिक डॉ. डी.के. पाण्डेय द्वारा अतिथियों के स्वागत के पश्चात वैज्ञानिक मंजू लता जैन ने राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस की आयोजन रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि इस बार प्रस्तुत 654 परियोजनाओं में आसियान और संयुक्त अरब अमीरात के प्रोजेक्ट भी शामिल रहे। बाल वैज्ञानिकों ने 15 भाषाओं में प्रस्तुतिकरण दिए। 95 स्रोत व्यक्तियों की देखरेख में बाल वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिदिन 100 परियोजनाओं का प्रस्तुतिकरण हुआ। 9 सांस्कृतिक कार्यक्रमों, 5 पोस्टरों और 20 परियोजनाओं को पुरस्कृत किया गया। ***(स्रोत फीचर्स)***